

पानी का संरक्षण करके ही भविष्य को सुरक्षित किया जा सकता है



कार्यक्रम में मौजूद किसान व अन्य

३४ - अंक

(आज समाचार सेवा)  
 झांसी, 10 अक्टूबर। कृषि विज्ञान  
 केंद्र, भरारी पर संचालित निकरा-  
 योजना और केंद्र के भ्रमण एवं  
 निर्धारण पर भारतीय कृषि अनुसंधान  
 परिषद, नई दिल्ली के उप महान  
 निदेशक, (प्राकृतिक संसाधन  
 प्रबन्धन) ३० एप्रैल के, चौथी  
 किया गया, इस अवसर पर ३० दशा-  
 अरुनाचलम, निदेशक, कामी, झांसी

झां आर० एस० यादव, निदेशक,  
आई०आई०एस०डल्य०सी०, दिल्ली,  
झा० जे०बी०एन० प्रसाद, राष्ट्रीय  
पो०आई० निकारा  
आई०सी०आ०आ०, हैदराबाद, झा०  
आनन्द सिंह, सह निदेशक, बोटा कापि  
एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बोटा  
एवं झा० निशी राय, अध्यक्ष,  
कौठोंगा०, झासी०का० साथ निकारा  
गांग०गांधी नगर खिंवारा० एवं बालाम

रिचार्जिंग, विद्युतीय कान निर्माण, बैक हेम का जोपैंशियर आदि करके किया जा रहा, जो कि अब समय की मांग है। पानी का संरक्षण करके ही भवितव्य को सुरक्षित किया जा सकता है, (जल है तो कल है)। कार्पोरेशन में कैंटोनेक्ट, शारीरीके प्रयासों कृषि में लगे नवजन्म को देख प्रकल्पों तथ्यके ओर कार्यक्रमों को विद्युत में लूपी लेनी होगी तभी गांवों की तीव्रता बढ़ावली। कार्यक्रम में निकसा गांव गांधीनगर, बिरुड़ा और बाबल टांडा के किसानों का सिंचार्य पाइ-१३०, बिल्डर सेट-२०० और लवटा पाइ-१५० के वितरण और किसानों को वितरित करने वाले दो फोर्ड- खारों की फसल में एकीकृत रोपन एवं कॉट प्रबन्धन और मूल्यांकन का एकोलॉगी रोपन एवं कॉट प्रबन्धन का विवेचन मुख्य अंतिम छाठा एस.कॉ. और घंटीरी और उपर्युक्त वैज्ञानिक/अधिकारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर कॉन्फर्म के वैज्ञानिक छाठा हिमांशु सिंह, डॉ. आदिश कुमार और अतीक अहमद, यो०० रमजान, या०००० आरोपकॉ, निकरा, ए०५२५ सोलानी की एवं मोनज कुमार जैन आदि का संलग्नता एवं मोनज कुमार जैन आदि का विवरण दिया।

www.english-test.net

कानपुर, रायबार १० अक्टूबर, २०२१

\*\* જાણ સાંકરણ પ્રદીપ રૂપનાથ કૃપા

वाराणसी | गोरखपुर | प्रयाग  
काशीपात्र (प्रांगणी) | ब्रह्मपुर

ગાંધીજી  
આગારા | બરેલી | પટના  
રાંચી (ઘનબાદ સંસ્કરણ)  
અમદાવાદ

अधिकतम 34.6 डि.से.

online Edition  
[www.ajhindidaily.com](http://www.ajhindidaily.com)

ମୋହନ

समाज के हर तबके को ऊपर उठाने की आवश्यकता हैः अरुणाचलम  
जनजातीय कृषि पर कार्यक्रम आयोजित

(आज समाचार सेवा) झाँसी, ९ अक्टूबर। केन्द्रीय कृषि विभागने अनुसार सम्पादन झाँसी द्वारा आजोड़ी के अपने महोरत्व व्याख्यान श्रृंखला के तहत जनजीविती कृषि के एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अधिकारी डॉ. एस. की. चौधरी, उत्तर महाराष्ट्राकार प्रक्रियक संसाधन प्रबन्धन, भारतीय पूर्वजी अनुसार परिचय, नई दिलों के काहा की खेती हाथों पूर्वज, बनवाई और जनजीविती बृंद करते आए हैं उन्हें खेती में आज का बहुत लाभ हुआ जालवायु परिस्थितियों में ज्यादा टिकाऊत है। उठाने का कहा की पर्याप्त खेती की ओर लगानी में जो जैव विविधता पाई जाती है उसके संरक्षण, सुधार वा बढ़ावा देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मुख्य वकाफ़ डॉ. अनिल कुमार, निदरेका (सिल्हारा), गरी लंबाई वाले केंद्रीय जैव परिविवरणालय, जो आपने अच्छाइयों में जनजीविती कृषि के महत्व के बारे में बताया और कहा कि जनजीविती कृषि के मान के समै सम्बन्धित सरायों का प्रयोग होता है तो वह एक प्रकार से जैविक खेती की तरह हो जाती है। इनप्रीत एवं सुमित्रा बतलानी जलवायु परिस्थितियों में टिकाऊत है इस तरह की पर्याप्त खेती की बढ़ावा देने की अवधिकारीता है।

A photograph showing five individuals at a formal event. From left to right: a man in a light blue shirt and dark trousers; a man in a white shirt and dark trousers; a woman in a red sari; a man in a light-colored suit and tie; and a man in a light blue shirt and dark trousers. They are positioned behind a long table covered with a white cloth, which holds a small floral arrangement and some papers. The background features a large "WELCOME" sign and a green globe. A banner with the text "Sri Lanka" and "Arch 2013" is partially visible.

महिला को सिलाई मशीन प्रदान करते हुए।

छाया-आज

करते हुए काहा की समाज के हर तबके को ऊपर उठाने की अवश्यकता है और विशेष रूप से अनुसूचित जाति और जातिकां के किसानों को कृषि की नई तकनीकों के माध्यम से उनकी आजीविका सुधारने पर जरूर दिया। इस कामकाज में भारत सरकार के अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति के महिला राशा प्रभुत्व किसानों की आजीविका सुधारने हेतु कपड़ा सिलाई मशीनें भी वितरित की गई। डॉ. चौधरी जासौंगे में तीन दिवसीय बैठक रखी पर एक ही वैदेशीय कृषिविनायिकों अनुसंधान संस्थान में जल्द रहे शोध कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान डॉ. चौधरी ने सम्बन्धित कृषि प्रयोगों में पशुधन और मुग्गी पालन तथा ताजा माड़ों की किसानों की भी डिझाइन किया। इनके अलावा संस्थान के वैज्ञानिकों से वितरित में शोध कार्यों के बारे में जानकारी की ओर एवं बल दिया कि हमारा शोध कार्य सधे किसानों को प्रभावित रखने वाले के लिए होना चाहिए। इस दौरान उठाने संस्थान के जल्द रहे योग्याता की कार्य प्रतिक्रिया का भी मूल्यांकन किया।

कार्वांकम की शुरुआत आदि.सी.ए.आर. कुलगांठ से हुई तारीख डॉ. ए. के. हाण्डा ने सभी का स्वागत किया। कार्वांकम का समाप्त राष्ट्रगांन से हुआ। इस कार्वांकम के दौरान भारतीय चरागां एवं चारांहाल अनुसंधान संस्थान के निवेशवाल डॉ. अमेश चंद्रा एवं राणी लक्ष्मी वाई कंट्रोलर कृषि विश्वविद्यालय, जैसी कोंपोफर, भारतीय एवं वैज्ञानिकों एवं प्रांती संस्कारण संस्थान के दिवाया अनुसंधान केंद्र के इंचार्ज डॉ. आर. एस. यादव एवं कृषि विज्ञान केंद्र, जासौंगे के वैज्ञानिकों एवं अनुशूचित जाति एवं जनजाति के किसान भी उपस्थित रहे। कार्वांकम का संचालन डॉ. इन्द्रदेव एवं घर्यांवाद जापन डॉ. आशाराम ने किया



## पारंपरिक खेती को संरक्षण, सुधार व बढ़ावा देने की आवश्यकता

केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान का आजादी के अमृत महोत्सव के तहत कार्यक्रम

झांसी (एसएनबी)। केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव व्याख्यान शृंखला के तहत जनजातीय कृषि पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अधियिक डॉ. एसके चौधरी, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने कहा कि जो खेती हमारे पर्वज, वनवासी और जनजातीय बंधु करते आए हैं उस खेती में आज की बदलती हुई जलवायु परिस्थितियों में ज्यादा टिकाऊपन है।

उन्होंने कहा कि पारंपरिक खेती की फसलों में जो जैव विविधता पाई जाती है उसको संरक्षण, सुधार एवं बढ़ावा देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. अनिल कुमार, निदेशक (शिक्षा), रानी लक्ष्मी वाई केन्द्रीय



झांसी : सिलाई मशीन वितरित करते संस्थान के पदाधिकारी। फोटो : एसएनबी

कृषि विश्वविद्यालय झांसी ने अपने व्याख्यान में जनजातीय कृषि के महत्व के बारे में बताया और कहा कि जनजातीय कृषि में कम से कम रसायनों का प्रयोग होता है और यह एक प्रकार से जैविक खेती की तरह ही होती है। इसलिए पौधण सुरक्षा बदलती जलवायु परिस्थितियों में टिकाऊपन

हेतु इस तरह की पारंपरिक खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। स्थान के निदेशक डॉ. अरुणाचलम ने सभी से आह्वान करते हुए कहा की समाज के हर तबके को ऊपर उठाने की आवश्यकता है और विशेष रूप से अनुसूचित जाति और जनजाति के किसानों को कृषि की नई तकनीजों के माध्यम से उनकी आजीविका सुधारने पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के अनुसूचित जाति उन्योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति के महिला तथा पुरुष किसानों को आजीविका सुधारने हेतु कपड़ा सिलाई मशीन भी वितरित की गई। डॉ. चौधरी झांसी में तीन दिवसीय दौरे पर आए हैं यहाँ इन्होंने केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान में चल रहे शोध कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान डॉ. चौधरी ने समाचार तक प्रणाली में पशुधन और मुर्गी पालन इकाई तथा मॉडल नसरी का भी उद्घाटन किया। कार्यक्रम की शुरुआत आईसीएआर कुलगांत से हुई तथा डॉ. एकै हाण्डा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन गांग्यान से हुआ। कार्यक्रम का सचालन डॉ. इन्द्र देव एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आशाराम ने किया।